पाठ-11

नई सुबह

- संकलित

आइए सीखें

■ कहानी का हाव-भाव के साथ वाचन ■ दहेज-प्रथा की बुराइयाँ ■ विलोम शब्द ■ पर्यायवाची शब्द ■ अकर्मक और सकर्मक क्रिया ■ संकेतों द्वारा कहानी लेखन।

आँगन में शहनाई बज रही थी। सुहागिनें मंगल गीत गा रही थीं। देवकी चाची फूली नहीं समा रही थी। कभी इधर-कभी उधर सजी-धजी मेहमानों के स्वागत में व्यस्त नज़र आ रही थी। खुशी के वातावरण में भी गीता अनमनी-सी अपने कमरें में बैठी थी, आज उसकी शादी होने वाली थी। बारात तो सुबह ही आ गई थी। चाचा, ताऊ, पिता, भाई सभी बारातियों की सेवा में व्यस्त थे। बारात वालों की फरमाइशें चल रही थीं। सब उन्हें पूरा करने में लगे थे।

गीता देवकी की इकलौती लड़की थी। महिलाओं द्वारा उसके भाग्य को सराहा जा रहा था। बाई बोली, 'बड़ा अच्छा लड़का मिला है, इंजीनियर है। कोई माँग नहीं रखी है।'

गीता को देखते हुए मौसी ने कहा, 'और फिर सुन्दर सुशील गीता में भी तो कोई कमी नहीं है। पढ़ी लिखी सुघढ़ है हमारी गीता।' बातें सुनकर गीता को कोई प्रसन्नता नहीं हुई। उसका मन अनजानी शंका से घिरा हुआ था।

बड़ी कठिनाई से रामनाथ जी ने यह संबंध तय करवाया था। जब लड़का तथा उसके पिता लड़की देखने आए थे तो घर आँगन में मानों बहार आ गई थी। बातचीत होते-होते बात दहेज पर आई। लड़के के पिता ने बड़े अंदाज से कहा, 'हमें दहेज में कुछ नहीं चाहिए। हम तो दहेज के खिलाफ हैं। हमारे लिए तो लड़की ही दहेज है। फिर भी यदि आप अपनी लड़की-दामाद को कुछ दे तो हमें एतराज नहीं।'

रामनाथ जी विनीत भाव से बोले, ''जो कुछ है, हमारा धन तो गीता ही है।'' लड़के के पिता ने कहा, ''बात आपकी सच है, पर खाली हाथ मुँह में नहीं जाता। हमारे सम्मान की भी बात है। लड़का तो हीरा

शिक्षण संकेत

▸ कहानी का वाचन हाव-भाव से करें और छात्रों से करवाएँ ▸ कहानी का सार बताएँ ▸ कहानी से मिलने वाले संदेश को सरल प्रश्नों के माध्यम से समझाएँ ▸ अकर्मक और सकर्मक क्रिया वाक्य प्रयोगों द्वारा समझाएँ।

है, हीरा।'' रामनाथ जी ने हाथ झुलाते हुए कहा, ''मैं आपकी भावनाओं का पूरा मान रखूँगा'' और संबंध तय हो गया। ये बातें गीता को अच्छी नहीं लगीं। शायद पिताजी लड़के के पिता की इच्छा जान नहीं पाए। गीता को उनकी बातों में छलावा स्पष्ट नज़र आ रहा था, परन्तु लोक-लाज के कारण बड़ों के बीच में बोलना उसने उचित नहीं समझा। वह उस समय चुप रही। उनके जाने के बाद उसने अपनी माँ देवकी से कहा, ''माँ मुझे इन लोगों की बातों से लग रहा है कि ये दहेज के लालची हैं, दहेज माँगेंगे।'' पर माँ कब मानने वाली थी। वह बोली, ''बेटी, थोड़ा बहुत तो सभी करते हैं, और हम भी करेंगे। इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं। कैसा सुन्दर राजकुमार-सा लड़का है। अच्छा भरा-पूरा परिवार मिला, घोड़ा-गाड़ी सुख के सभी साधन हैं। मैं तो धन्य हो गई जो ऐसा रिश्ता मिला है।''

गीता ने विवशता से कहा, ''माँ, सब साधनों से सुख नहीं मिलता। लोग अच्छे होने चाहिए। आपने शंभुपुरा वालों का रिश्ता उनकी गरीबी के कारण ठुकराया, पर मुझे लगता है कि वे लोग अच्छे हैं।''

''चुपरह ऐसी बातें मत कर। कोई सुन लेगा तो क्या कहेगा'' गीता को झिड़कते हुए माँ ने कहा। सुसंस्कारी गीता चुप्पी साध गई।

साँझ हुई। बारात के स्वागत की तैयारी होने लगी। दिन भर बारातियों और दूल्हे के नखरे उठाते-उठाते चाचा-ताऊ भी झल्लाने लगे। चाचा रामनाथ से बोले, ''यह भी कोई बात है। वे लोग बात-बात में अड़ रहे हैं, दिन के खाने में आइस्क्रीम माँग रहे हैं। यह गाँव है, यहाँ क्या तुरन्त आइस्क्रीम मिलती है? तुम्हें तो पता भी नहीं, मैंने सूरज को मोटर साइकल से कस्बे भेजकर मँगवाई। ये तो तंग कर रहे हैं।'' रामनाथ बोला, ''भाई बाराती हैं, थोड़ा बहुत तो तंग करते हैं। बुरा मत मानो। चलो, बारातियों के स्वागत के लिए आई फूलमालाएँ कहाँ हैं? वह बोला, ''वह तो गीली बोरी में दबाकर रखी हैं।'' फिर सभी अपने काम में लग गए।

गाजे-बाजों के साथ बारात बड़े ठाठ-बाट के साथ आई। दूल्हा घोड़ी से उतरा, और वहीं खड़ा रह गया। दूल्हा और उसके पिता जी बोले, ''रामनाथ जी दूल्हा दरवाजे पर कार में बैठकर ही आएगा। पैदल कैसे आऐ, कुछ व्यवस्था करो।'' रामनाथ जी के पाँवों तले ज़मीन खिसकने लगी। कार कहाँ से लाएँ? किसी ने कहा, ''सेठ जी की माँग लाएँ। दूल्हे के पिता ने कहा, ''हम माँगी हुई कार की नहीं, अपनी कार की बात कर रहे हैं। दूल्हा इंजीनियर है। कार तो चाहिए ही।'' यह सुनकर घराती और बाराती कानाफूसी करने लगे। थोड़ी देर पहले जो रौनक थी, वह समाप्त हो गई। बाजे बंद हो गए। सन्नाटा-छा गया। रामनाथ अपना सिर पकड़कर बैठ गए।

उन्हें चाचा पकड़कर घर में लाए। बारात भी जनवासे लौट गई। बात बढ़ गई।

सजी-सँवरी गीता वरमाला की तैयारी में थी। तभी उसने सुना कि दूल्हे ने कार की माँग रखी है। वह सिर से पाँव तक काँप गई। एक बार तो उसे लगा कि उसकी साँस ही थम गई है, किन्तु दूसरे ही पल उसने कड़क आवाज़ में कहा, ''माँ मैंने कहा था, आपने मेरी बात नहीं मानी। मैं इस लड़के से शादी नहीं करूँगी।''

बात दूल्हे के कानों तक पहुँची। वह घबरा गया। अपने पिता को कोसने लगा। अब क्या! बाजी हाथ

से निकल गई थी।

इधर गीता ने अपने पिताजी से निवेदन करते हुए कहा, ''अगर आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ! यदि कोई व्यक्ति, वधू या उसके माता-पिता या अन्य नातेदार या संरक्षक से किसी दहेज की प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से माँग करता है तो वह दण्डनीय होता है।''

उनके मुँह से कोई बोल नहीं निकला। वह बोली, ''पिताजी, आप शंभुपुरा वालों के घर जाइए। सारी बात कहिए। वे ज़रूर मान जाएँगे। मैं उस लड़के को भी अच्छी तरह जानती हूँ। वह आपकी लाज रख लेगा।''

गीता की बात पर सभी ने विचार किया। आधी रात हो गई थी। गीता के चाचा और ताऊ तुरन्त शंभुपुरा के लिए रवाना हो गए। शंभुपुरा पहुँचकर उन्होंने रघुनाथ जी को सारी घटना बताई और कहा, ''हमने आपका संबंध स्वीकार न कर भारी गलती की, हम क्षमा प्रार्थी हैं। यदि आप कृपा कर संबंध स्वीकार करें तो हम आपके आभारी रहेंगे।''

रघुनाथ जी बहुत ही मिलनसार एवं मानवतावादी थे। वे गीता जैसी सुशील, सुन्दर बहू पाने की सोचकर बहुत खुश हुए। उन्होंने सहर्ष यह रिश्ता स्वीकार कर लिया और अपने कुछ सगे संबंधियों को लेकर लग्न मण्डप में पहुँच गए।

मध्य रात्रि के बाद विवाह सम्पन्न हुआ। सुबह होते-होते गीता की विदाई हो गई।

इधर रातभर दूल्हा और उसके पिता बेचैनी से टहलते रहे। उन्हें इंतजार था कि कोई मनाने आएगा। कुछ बाराती भी बुरा-भला कहते हुए चले गए; कुछ रुके रहे। जब उन्हें पता लगा कि रात में लड़की को ब्याह कर विदा कर दिया गया है तब उन पर मानों घड़ों पानी पड़ गया। उन्होंने जल्दी-जल्दी अपना सामान समेटा; और सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े हुए। कार के स्थान पर अपमान का दहेज लेकर उन्हें बिन ब्याहे घर लौटना पड़ा। सब तरफ बदनामी हुई सो अलग। गीता का आँचल आशीषों से भर गया। यह नई सुबह गीता के लिए नई खुशियाँ लेकर आई थी।

शब्दार्थ

अनमनी=उदास। **छलावा**=धोखा। **मानवतावादी**=मनुष्यों के प्रति सहानुभूति रखने वाला।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**
   - सगे – सँवरी
   - सजी – प्रार्थी
   - क्षमा – अप्रत्यक्ष
   - प्रत्यक्ष – संबंधी

(ख) कोष्ठक में दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प चुनकर वाक्य को पूरा कीजिए—

- जो कुछ है हमारा ..... तो गीता ही है। (मन/धन)
- ..... हैं, थोड़ा बहुत तो तंग करते हैं। (घराती/बाराती)
- थोड़ी देर पहले जो रौनक थी वह ..... हो गई। (समाप्त/आरंभ)
- सब तरफ ..... हुई सो अलग। (प्रशंसा/बदनामी)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) गीता क्यों अनमनी थी?

(ख) महिलाएँ गीता के भाग्य को क्यों सराह रही थीं?

(ग) शंभुपुरा वालों का रिश्ता किस कारण ठुकराया गया था?

(घ) 'हम दहेज के खिलाफ हैं।' यह किसने कहा?

(ङ) रघुनाथ जी का स्वभाव कैसा था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) गीता के घर शादी के दिन कैसा वातावरण था?

(ख) गीता को किनकी बातों में छलावा नज़र आ रहा था? वह छलावा क्या था?

(ग) ''अगर आप बुरा न माने'' कहकर गीता ने पिताजी से कौन-सी बात कही?

(घ) शंभुपुरा पहुँचकर गीता के चाचा ने रघुनाथ जी को कौन-सी घटना बताई?

(ङ) ''अपमान का दहेज'' लेकर कौन लौटा तथा क्यों?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

दहेज, इंजीनियर, सुसंस्कारी, सन्नाटा

5. शुद्ध वर्तनी पर सही का (✓) निशान लगाइए—

रिस्ता / रीश्ता / रिश्ता

व्यसत / व्यस्त / वयस्त

बिलकुल / बिलकूल / विलकुल

सनाटा / संनाटा / सन्नाटा

सहर्ष / सर्हष / सहर्से

6. निम्नलिखित शब्दों के 'विलोम' शब्द लिखिए—

मंगल, मान, दण्ड, बेचैन, प्रसन्न

7. निम्नलिखित गद्यांश को उचित विराम चिह्नों के साथ लिखिए—

चाचा रामनाथ से बोले यह भी कोई बात है वे लोग बात बात में अड़ रहे हैं दिन के खाने में आइस्क्रीम माँग रहे थे यह गाँव है यहाँ क्या तुरंत आइस्क्रीम मिलती है तुम्हें तो पता ही नहीं मैंने सूरज को मोटर साइकल से भेजकर मँगवाई

ध्यान से पढ़िए

- गीता रोती है।
- पिता बारात की व्यवस्था करते हैं।

इन दोनों वाक्यों में 'रोती है' तथा 'व्यवस्था करते हैं' के द्वारा कार्यों का ज्ञान हो रहा है। **जिन शब्दों से किसी कार्य के होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।**

यहाँ पहले वाक्य में 'रोती है' क्रिया से पूरी बात स्पष्ट हो जाती है। दूसरे वाक्य में 'व्यवस्था करते हैं' से स्पष्ट नहीं होता कि किसकी व्यवस्था करते हैं। 'बारात' शब्द से पता चलता है कि व्यवस्था किसकी होना है। तब कथन का सम्पूर्ण अर्थ बोध होता है। 'रोती है' क्रिया को किसी कर्म की आवश्यकता नहीं है, अत: यह अकर्मक क्रिया है। 'व्यवस्था करते हैं' क्रिया को कर्म 'बारात' की आवश्यकता है। कर्म के बिना क्रिया पूर्ण भाव व्यक्त नहीं कर पा रही है, अत: यह सकर्मक क्रिया है।

क्रिया के दो रूप होते हैं—

- **अकर्मक क्रिया :** जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—रोना, हँसना, सोना, जागना, आना, जाना, चलना, उछलना आदि।
- **सकर्मक क्रिया :** जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—लिखना, पढ़ना, सौंपना, बेचना, बनाना, समझाना आदि।

8. दिए गए वाक्यों मे ंसे अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए—

- साँझ हुई। (.....)
- वह अपने पिता को कोसने लगा। (.....)
- पिताजी, शंभुपुरा वालों के घर जाइए। (.....)
- गीता हँसती है। (.....)

अब करने की बारी

- अपनी शाला की बाल सभा में इस कहानी का एकांकी के रूप में मंचन कीजिए।
- दिए गए संकेतों के आधार पर एक कहानी लिखिए एवं उससे मिलने वाली शिक्षा भी बताइए— दो बिल्लियाँ-एक रोटी प्राप्त करना - दोनों में झगड़ा - चालाक बन्दर - तराजू-बन्दर द्वारा अधिक टुकड़े को खाना - बिल्लियों का विरोध - बन्दर द्वारा मेहनताना लेना - भविष्य में झगड़ा न करने का निर्णय।
- 'दहेज एक सामाजिक अभिशाप है।' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

❑❑